Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भारत लोग और अर्थव्यवस्था

कक्षा -12

अध्याय -4

जल संसाधन

भाग - 3

रामावतार यादव

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जल के गुणों का ह्रास

- जल में अवांछित बाह्य पदार्थों से जल प्रदूषित होता है। जैसे– सूक्ष्मजीवों, रासायनिक पदार्थों एवं औद्योगिक अपशिष्टों के मिश्रण से।
- जब प्रदूषक तत्व भूमि में नीचे भी पहुँच जाते हैं तो भौम जल को प्रदूषित करते हैं।

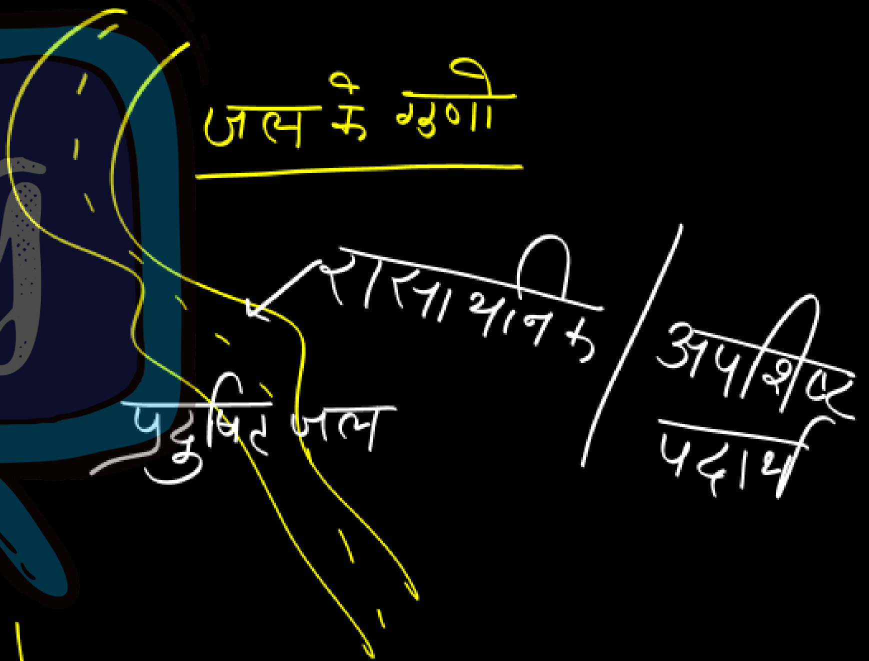

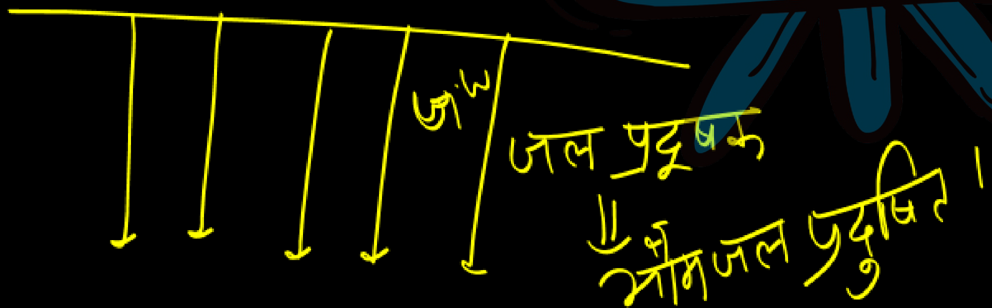

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जल संसाधन

जल

- धरातलीय जल S.W
  - नदी
  - झील
  - तलैया
  - तालाब
- भौम जल (G.W.)
  - कुँआ
  - नल-कूप।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

→ भारत का कुल क्षेत्रफल - 32,87,263 Km^2 (विश्व - 2.4%)

→ भारत की जनसंख्या 121 करोड़ (17.5%)

→ जल संसाधन → 4%

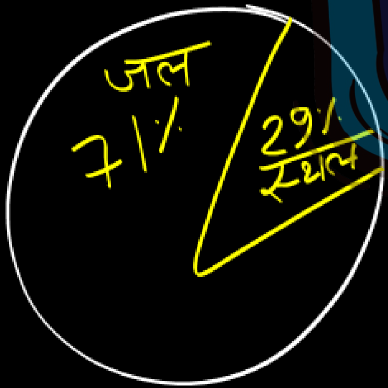

→ कुल जल

- 97% लवणीय जल
- 3% स्वच्छ/मीठा जल।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जल संरक्षण एवं प्रबन्ध

भारत में स्वच्छ जल की घटती उपलब्धता तथा बढ़ती मांग के कारण जल संरक्षण व प्रबन्धन के लिए प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता है।

- जल बचत तकनीक और विधियों का विकास
- प्रदूषण से बचाव के उपाय
- जल-संभर विकास → जल का समुचित प्रबन्ध।
- वर्षा जल संग्रहण → टांका, बावड़ी, तालाब, बांध
- जल के पुनः चक्रण एवं उपयोग → जल → नहाने → पौधे → गन्दा →

→ विश्व की जनसंख्या - 17.5%

→ विश्व का जल → 4%

→ जल का सर्वाधिक उपयोग → कृषि में किया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

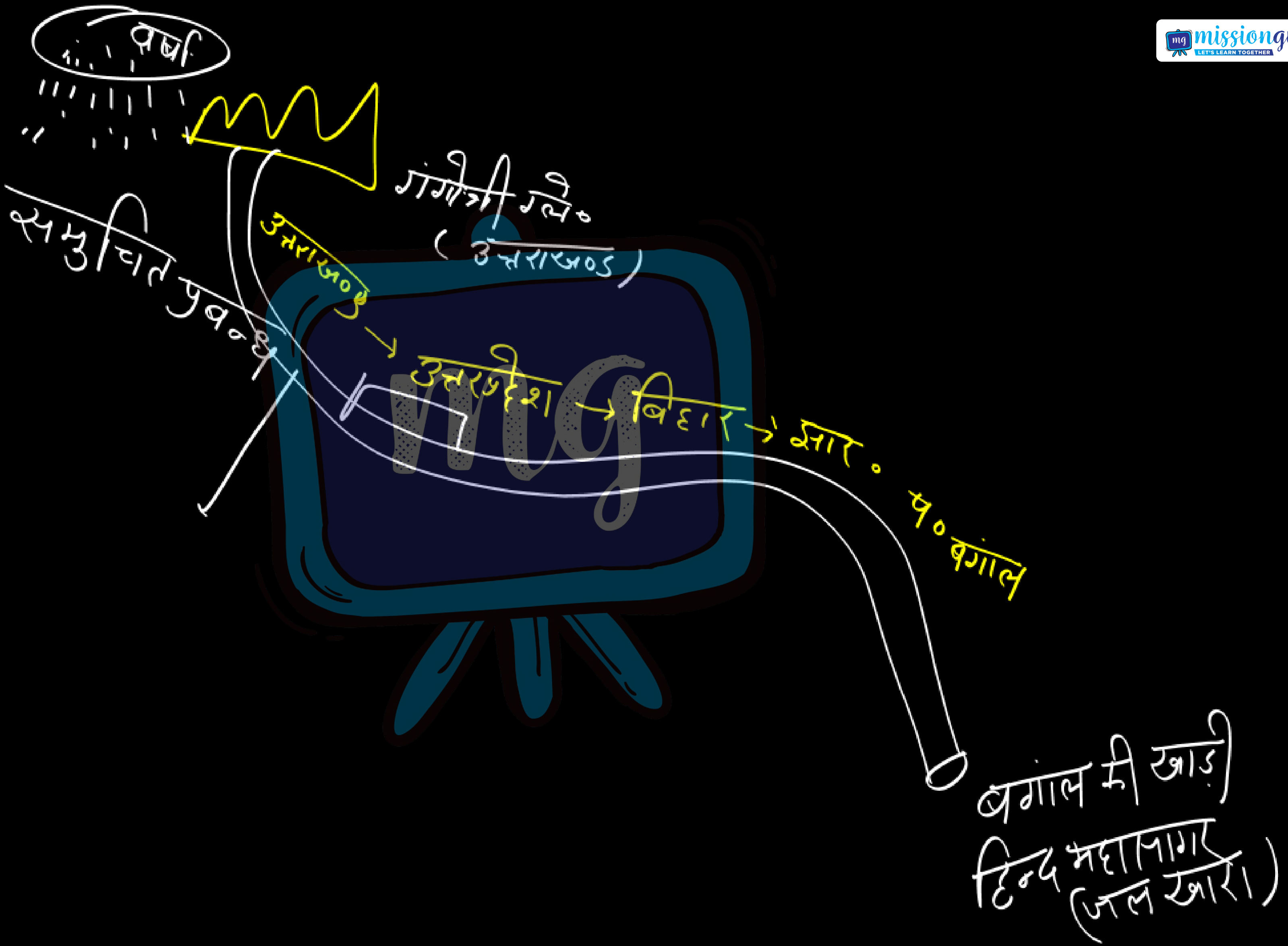

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जल प्रदूषण का निवरण :

- नदियों में प्रदूषकों का संकेन्द्रण बढ़ रहा है।
- केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) तथा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (SPC) जल संसाधन की गुणवत्ता 507 स्टेशनों पर मॉनीटरिंग कर रहे हैं।
- दिल्ली व इटावा के मध्य यमुना नदी सर्वाधिक प्रदूषित नदी है।
- अहमदाबाद में साबरमती।
- लखनऊ में गोमती।
- मदुरई में काली, अडयार। चेन्नई (T.N)
- कानपुर व वाराणसी में गंगा।

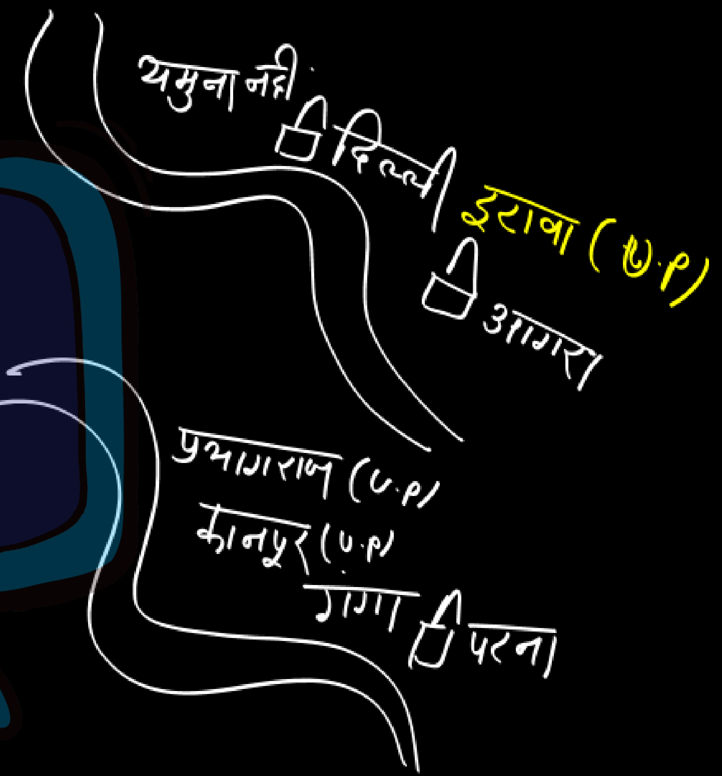

Under CSR Support by ipca Foundation

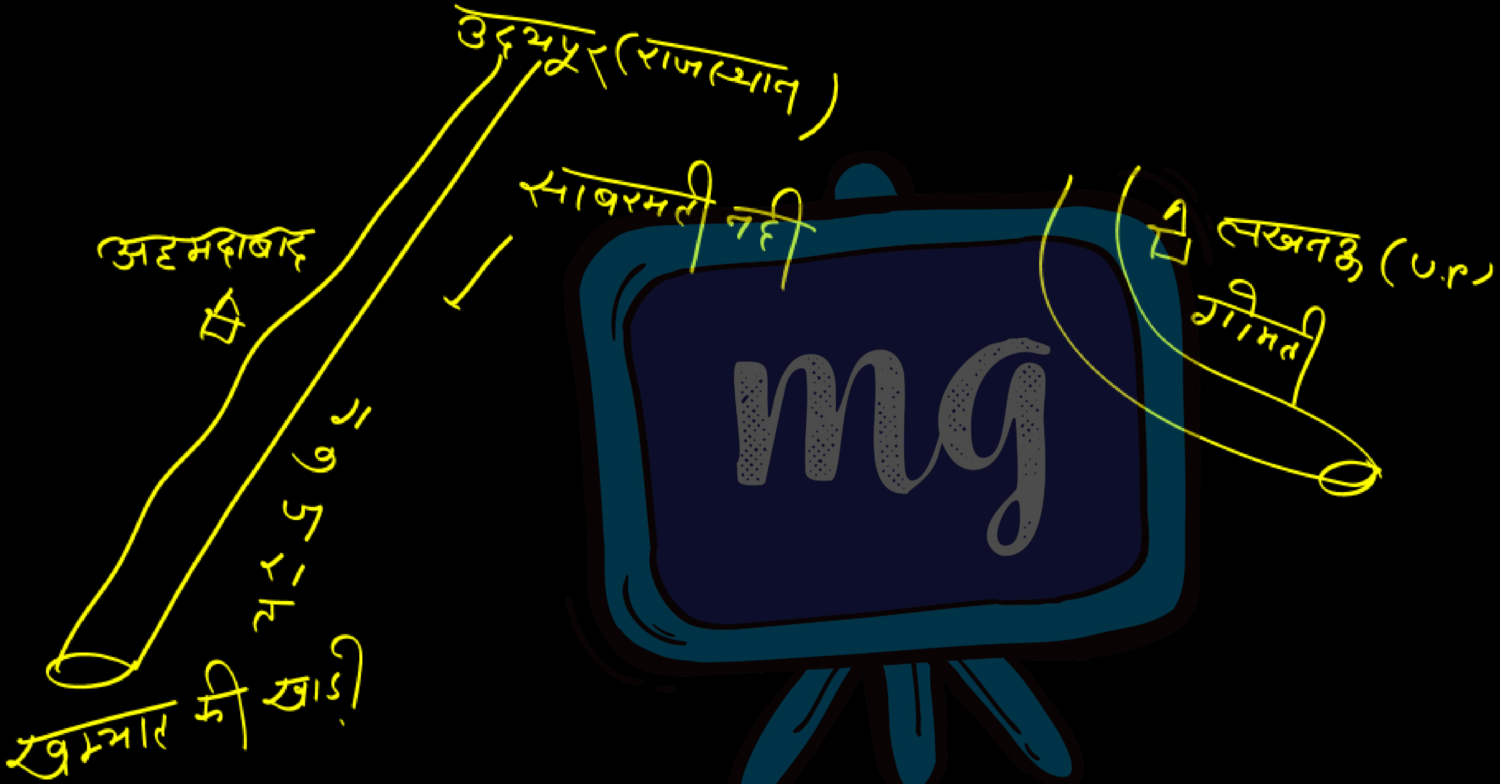

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

वैधानिक व्यवस्था

- जल अधिनियम 1974
- जल उपकर अधिनियम 1977
- पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम 1986

संविधान संशोधन / ५२ वे अधिनियम /

③

④

पर्यावरण सरंक्षण अधि - 1986

→ जल प्रदुषण नियन्त्रण व निवारण अधि → 1974

Act (अधिनियम)

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जल का पुनः चक्र और पुनः उपयोग

- कम गुणवत्ता वाले जल जैसे शोधित अपशिष्ट जल का उपयोग उद्योगों में शीतलन व अग्निशमन के लिए किया जा सकता है।
- नगरीय क्षेत्रों में स्नान, बर्तन धोने और मोटर गाड़ियों की सफाई में प्रयुक्त जल को बागवानी के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

जल संभर प्रबन्धन

- "धरातलीय और भौमजल संसाधनों का कुशल प्रबन्धन जल संभर प्रबन्धन कहलाता है।"
- विस्तृत अर्थ में जल संभर प्रबन्धन के अन्तर्गत सभी प्राकृतिक (जैसे- भूमि, जल, पौधे तथा प्राणियों) और जल संभर सहित मानवीय संसाधनों के संरक्षण, पुनरुत्पादन और विवेकपूर्ण उपयोग को सम्मिलित किया जाता है।
- जल संभर प्रबन्धन का प्रमुख उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों तथा समाज के मध्य सन्तुलन स्थापित करना है।

धरातलीय + भौम जल

कुशल प्रबन्ध
||
जल संभर प्रबन्धन

प्राकृतिक संसाधन (जल) व समाज के मध्य सन्तुलन स्थापित।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- भारत के कुछ क्षेत्रों में राज्य तथा केन्द्रीय सरकार द्वारा अनेक जल संभर विकास व प्रबन्धन कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं।
- इनमें से कुछ कार्यक्रम गैर-सरकारी संगठनों द्वारा (NGO) भी चलाये जा रहे हैं। हरियाली (केन्द्र सरकार), नीरू-मीरू (आंध्र प्रदेश) तथा अरवारी पानी संसद (अलवर, राजस्थान) भारत के कुछ जल संभर कार्यक्रम हैं।

जल संसाधन
||
समवर्ती सूची
||
कानून बनाने का अधिकार
||
संघ व राज्य दोनों।

अरवारी पानी संसद (अलवर) राजस्थान

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

वर्षा जल संग्रहण

- वर्षा के संग्रहण को विभिन्न उपयोगों हेतु रोकने व एकत्र करने की विधि जल संग्रहण कहलाती है।
  - कम मूल्य और पारिस्थितिकी अनुकूल विधि जिसमें वर्षा जल को नलकूप व गड्ढों और कुओं में एकत्र किया जाता है।
  - पानी की उपलब्धता को बढ़ाता है।
  - भूमिगत जल स्तर को नीचा होने से रोकता है।
  - फ्लोराइड और नाइट्रेट्स जेसे संदूषकों को कम करके अवमिश्रण भूमिगत जल की गुणवत्ता बढ़ाता है।
  - मृदा अपरदन और बाढ़ को रोकता है।
  - तटीय क्षेत्र में लवणीय जल के प्रवेश को रोकता है।

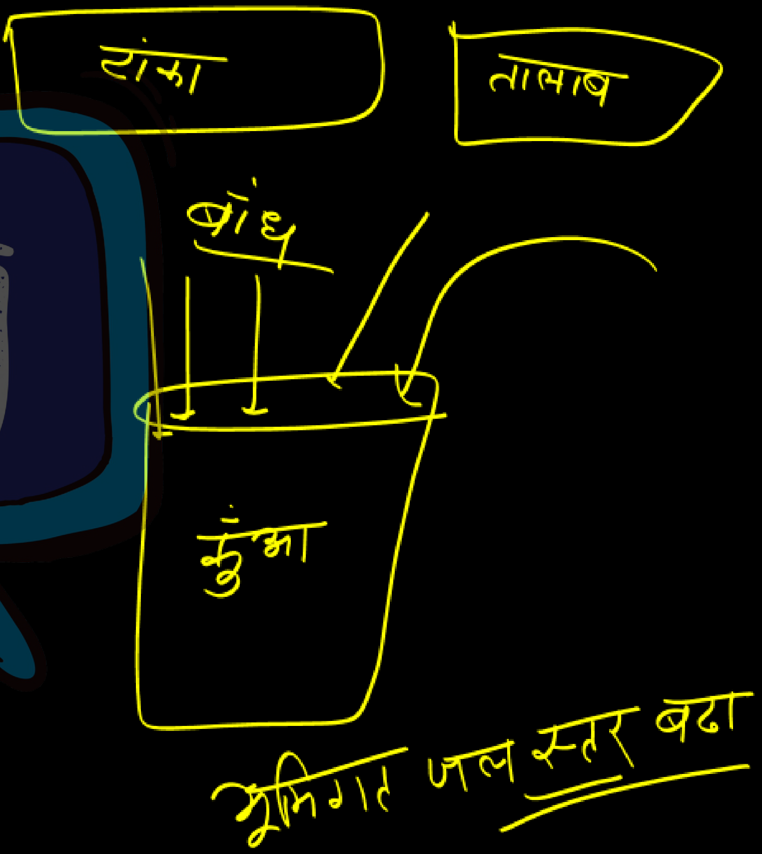

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

मिट्टी अपरदन → मिट्टी का कटाव होना ही मृदा अपरदन कहते हैं।

कारण
- → जल अपरदन
- → वायु अपरदन

→ मिट्टी अपरदन किसान की रेंगती हुई मृत्यु कहते हैं।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए।

(i) निम्नलिखित में से जल किस प्रकार का संसाधान है?

(क) अजैव संसाधन

(ख) अनवीकरणीय संसाधन

(ग) जैव संसाधन

(घ) चक्रीय संसाधन

(D)

संसाधन

जैव संसाधन

Ex→ वृक्ष

जीव-जन्तु

अजैव संसाधन

Ex वायु, प्रकाश।

Under CSR Support by ipca Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER